13
दर्शन मित्र

राज्य और जनसाधारण की प्रतिक्रिया

राज्य और जनसाधारण जो पर्यावरण में हुई क्षति से सीधे तौर पर प्रभावित हुए दोनों ने ही इस प्रक्रिया पर अपना उत्तर दिया, पर अलग-अलग तरीके से। राज्य द्वारा पर्यावरण निम्नीकरण के संकट पर हाल ही में ध्यान देना शुरू किया गया, पर यह अभी अधूरा ही है। इसलिए इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि राज्य द्वारा पर्यावरण बचाव के लिए जो सुझाव दिए गये वे सिर्फ अवस्थापन (placement) मात्र हैं, व्यापक (comprehensive) नहीं। उदाहरण के तौर पर - वनोन्मूलन (deforestation) और ईंधन की लकड़ी की कमी की समस्या से निजात पाने के लिए राज्य द्वारा ~~पेड़ पौधे लगाने~~ वृक्षारोपण योजना की शुरुआत की गई ~~यह काम खुद राज्य~~ जिसे राज्य ने अपने स्तर पर या किसानों को प्रोत्साहित करके किया। पर राज्य के अपने स्तर पर किये गये उपक्रम ज्यादातर असफल ही रहे। इसके कई कारण रहे —

(1) एक ही तरह की फसल और वृक्ष लगाने का कल्चर, विशेष रूप से व्यवसायिक फायदा उठाने के लिए ऐसा किया गया। इस संस्कृति ने मिक्स्ड फॉरेस्ट सिस्टम को एक तरीके से खत्म कर दिया।

(2) वृक्षारोपण योजना के लिए आम लोगों से उनके काम में आने वाली जमीन छिन ली गई।

(3) शीर्ष पाद पद विन्यास प्रणाली को अपनाया जाना। (Top-Down implementation)

इस तरह वृक्षारोपण की ये योजनाएं गरीब को फायदा पहुंचाने के बजाए उसके अधिकार और संसाधन छिनने वाली बन गई, जिससे इन योजनाओं को लोगों के विरोध का सामना करना पड़ा।

पड़ोस से ले लेना, समय आने पर एक-दूसरे का मिल-जुल कर काम करना देना जैसी बाते खत्म हो जाती हैं।

(6) <u>औरतों का स्वदेशी ज्ञान</u> — खाने-पीने के उत्पाद इकट्ठे करने में भी पौधों की पोषण संबंधी, मेडिसिनल ज्ञान आवश्यक है। कुछ पौधे जो रोजमर्रा मे इस्तेमाल नहीं किये जाते पर फूड की कमी के चलते उपयोग किए जा सकते हैं उसकी जानकारी भी आवश्यक है। यह सब ज्ञान औरतें अपने बड़ो से सीखती हैं और फिर आगे सिखाती हैं। नई तकनीक आने से और नये तरीके के उत्पाद बनने से औरतों का ये ज्ञान भंडार धीरे-धीरे खत्म होने लग गया।

दर्शन मित्र

11

दर्शन मित्र

(2) आय – इकट्ठी की गई वस्तुओं में आई कमी का सीधा प्रभाव आय पर पड़ता है। क्योंकि रोजमर्रा की वस्तुओं को जोड़ने में लग जाने में वाला समय बढ़ने पर फसल उगाने और उसकी देखभाल करने के समय में कमी आ जाती है। औरतों पर यह अतिरिक्त बोझ घर के पुरुष वर्ग को कमाई के लिए दूसरे राज्यों, जगहों पर पलायन कर जाने की वजह से होता है।

(3) पोषण – जैसे ही कृत्रिम उत्पादन में, ग्रामीण संसाधनों, अन्न उत्पाद में कमी आती है वैसे ही भोजन के आपसी बंटवारे में भी। कम भोजन कम हिस्सा। दूसरा ईंधन की कमी भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है। अधपका खाना पूरा पोषण नहीं देता। वैसे तो इस कमी का सभी पर ही प्रभाव पड़ता है पर औरतों और बच्चों पर ज्यादा पड़ता है क्योंकि खाने के विभाजन में भी लिंग आधारित भेदभाव सामने आता है।

(4) स्वास्थ्य – कम पोषक तत्व और स्वास्थ्य संबंधी उपचार की कमी के अलावा औरतों को पानी से जन्मी बीमारियाँ अधिक होती हैं। खेतों में उर्वरक, कीटनाशक, अलावा पशुओं को नहलाना, घर के कामों में पानी का प्रयोग, बीमारों का ख्याल रखना ये सब सब औरतों के जिम्मे होते हैं जिससे पानी के साथ उनका संपर्क ज्यादा रहता है।

(5) सामाजिक सपोर्ट नेटवर्क – संसाधन खत्म हो जाने पर एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में पलायन औरतों का सामाजिक सपोर्ट सिस्टम खत्म कर देता है जैसे कई बार खाने पीने की वस्तुएं

10

III

वर्ग और लिंग पर प्रभाव

(9) (10)

पर्यावरण क्षय और प्राकृतिक संसाधनों के राज्य या व्यक्तिक अधिग्रहण की प्रक्रिया वर्ग (class) और लिंग पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। यह तीन कारणों से है —

(1) पहले से ही उपस्थित लिंग आधारित लेबर / मजदूरी। गरीब किसानों में महिलाएं और कबीले के लोग ही ज्यादातर जंगल, ग्राम संसाधन और जल स्त्रोतों द्वारा उत्पाद इकट्ठा करते है, उनपर घरेलु काम-काज का भी अतिरिक्त भार रहता है।

(2) पौष्टिक पदार्थ और संसाधनों के बंटवारे में भी लिंग के आधार पर भेद भाव रखा जाता है।

(3) ग्रामीण अर्थव्यवस्था, तकनीक, उत्पादक संसाधनों तक औरतों की पहुँच पुरुष की अपेक्षा कम होती है और वे ज्यादातर इनके लिए पुरुषों पर ही निर्भर रहती है। इम्पलायमेंट के अवसर में कमी, ट्रेनिंग की सुविधा न मिलना, निम्न वेतन का सामना उन्हें करना पड़ता है। श्रम न काम के लिए

इन कारणों के परिपेक्ष में वर्ग-लिंग पर प्रभाव को छः पहलुओं के जरिए देखा जा सकता है।

(1) समय — क्योंकि महिलाएं ही ईंधन, चारा और पानी जैसी मूलभूत चीजों को इकट्ठा करने का काम करती है, उनके काम करने के घंटे जो पहले ही दस-बारह घंटे होते हैं संसाधनों में कमी के चलते और बढ़ जाते है। आस-पास न मिलने पर उन्हें दूर-दराज तक पैदल चलकर जाना पड़ता है।

दर्शन मित्र

9

(16) (9)

(ii) प्राइवेटाइजेशन की प्रक्रिया

कम्युनिटि रिसोर्सेज़ को प्राइवेट हाथों में सौंपने के भी वही प्रभाव सामने आये जो कोलोनाइजेशन के समय ब्रिटिशर्स के अधीन होने पर थे। गरीब को हर तरीके से नुकसान ही हुआ।

अन्य कारण

(1) कम्युनिटि रिसोर्ज़ मैनेजमेंट सिस्टम धीरे-धीरे खत्म होता गया। जो कई बार जो जितना इस्तेमाल करे उतना पर्यावरण को बनाकर रखे पॉलीसी के कारण सफल रहता है। दूसरा स्थानीय लोगों के धार्मिक विश्वास, रीति-रिवाज भी पर्यावरण ह्रास से रोकते हैं।

(2) जनसंख्या वृद्धि के कारण संसाधनों का प्रयोग अधिक होने लगा और उनमें गिरावट आती चली गई। पर जनसंख्या वृद्धि के कारण संसाधनों में कमी आई, या संसाधनों की कमी के कारण जनसंख्या बढ़ी यह कह पाना मुश्किल है। संसाधन कम होने से लोगों की नौकरियां चली गई, घर बैठना पड़ा तो औरतों को बच्चे जनने का अधिक समय मिला और अधिक संतान को अधिक आय स्रोत के रूप में देखा गया।

(3) खेतीबाड़ी के लिए तकनीक का चुनाव और स्वदेशी ज्ञान में कमी होते जाना भी एक कारण बना।

दर्शन मित्र

8

दर्शन मित्र

(8)

प्राथमिक कारण

(1) पर्यावरण क्षय

पर्यावरण क्षय मुख्य रूप से वनों की कटाई, भूमी। मिट्टी की कोरिशन का खराब होना और जल संसाधनों की कमी के रूप में सामने आती है।
वीना अग्रवाल लिखती है कि 1980 तक 56.6% भूमि को वायु और वाटर इरोजन की वजह से नुकसान पहुंच चुका था। 1985-87 के बीच ही देश के वनक्षेत्र में 19.5% गिरावट आ गई। वाटर लाजिंग के कारण आधे से ज्यादा जमीन का हिस्सा नष्ट हो गया। लोकल लोगो के अनुसार जगह 5 मील रैगिस्तान में बदल गई। पीने लायक पानी में कमी आ गई जो कि ज्यादा कीटनाशकों व उर्वरकों के इस्तेमाल के कारण हुआ।

(2)(a) संसाधनों के राज्य के अधीन लाने की प्रक्रिया

संसाधनों पर राज्य का अधिकार हो जाने के निम्न प्रभाव पड़े

(i) ब्रिटिश के मोनोपोली के तहत ज्यादा जमीन टिम्बर एक्सट्रैक्शन के लिए रखी

(ii) लोगों के मुक्त रूप से संसाधनों के प्रयोग करने के अधिकारों में कमी आई

(iii) वैज्ञानिक मैनेजमेंट को बढ़ावा देने से व्यावसायिक फायदा देने वाली फसल का उत्पादन किया गया और स्थानिय लोगों की आवश्यकताओं को दरकिनार कर दिया।

(iv) रेलवे बनाने, सिप और ब्रिज बनाने के लिए वन नष्ट किए जाने लगे।

इन सबके कारण स्थानीय लोगो और वनाधिकारियों के बीच टकराव बढ़ा और कानुनी तरीके से संसाधनों का प्रयोग बढ़ने लगा और लोकल मैनेजमेंट सिस्टम लगभग खत्म होता चला गया।

पर्यावरण क्षय और प्राकृतिक संसाधनों का अधिग्रहण

भारत में ग्रामीणों द्वारा ज्यादातर चीजें या तो ग्राम कॉमन से या जंगल से पाई जाती है जैसे — फूड, ईंधन, चारा, लकड़ी, खाद, मेडिसिनल हर्ब्स, हैंडिक्राफ्ट आइटम, गोंद इत्यादि। ज्यादातर ग्रामीण ग्राम कॉमन का यूज करते हैं पर गरीब ग्रामीणों के लिए वह एकमात्र साधन होता है। आंकड़ों के अनुसार गरीब ग्रामीण की आय का 9 से 26 प्रतिशत इन्हीं से आता है जबकि जमींदारों का 1 प्रतिशत। इसी तरह जंगल भी जीवनयापन का सहारा बनते हैं। बीना अग्रवाल आंकड़ों के सहारे बताती है कि 30 मिलियन से ज्यादा लोग वन उत्पाद पर निर्भर है। इस तरह ग्राम कॉमन और वन नष्ट होने से गरीब ग्रामीण, कबीले के लोग अत्यधिक प्रभावित होते है। इन्हें संसाधनों की कमी का दो कारणों से सामना पड़ता है

(1) पर्यावरण क्षय के कारण

(2) प्राकृतिक संसाधनों के राज्य या व्यक्ति विशेष के अधिक अधीन हो जाने के कारण

इन दोनों को बीना अग्रवाल प्राथमिक कारण मानती है और इनके अलावा संसाधनों के रखरखाव का अधिकार स्थानीय लोगों के हाथ से लेना, जनसंख्या वृद्धि, खेती-बाड़ी में तकनीक का चुनाव और स्थानीय लोगों के पौधों वनस्पति संबंधी ज्ञान का ह्रास भी अन्य कारणों के रूप में सामने आते हैं।